डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्योत्सव का चौथा दिन
भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी
युवाओं का रचनाकर्म भी युवा साहिती में आया सामने
कवि सम्मेलन का भी आयोजन

नई दिल्ली, 15 फ़रवरी 2018 । साहित्य अकादेमी द्वारा मनाए जा रहे साहित्योत्सव 2018 के चौथे दिन 'भारत की स्वाधीनता के 70 वर्ष : साहित्य में चित्रण' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन वक्तव्य में ओड़िया के प्रख्यात साहित्यकार एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री मनोज दास ने कहा कि स्वतंत्रता के समय में राष्ट्रवादी भावनाएँ प्रखर थीं और वे देश की सभी भाषाओं में अभिव्यक्त हो रही थीं। आज के समय में लेखन की कई शाखाएँ अस्तित्व में हैं और उन सभी का अपना अलग महत्त्व है। कई लोग मिथकों को अपने लेखन में लाते हैं। उसी तरह दलित लेखक अपने साथ हुए उत्पीड़न को लिखता है। महाश्वेता देवी जैसी प्रसिद्ध लेखिका ने आदिवासियों पर ख़ूब लिखा है। सभी तरह के लेखन का केन्द्र मानवता है। बीज भाषण देते हुए प्रख्यात लेखक एवं विद्वान श्री हरीश त्रिवेदी ने कहा कि साहित्य परिपक्व होने में समय लेता है, क्योंकि वह समाचार नहीं है। लेखक के लेखन में ख़ुशी और पीड़ा साथ–साथ अभिव्यक्त होती है। फिराक गोरखपुरी जैसे लेखक ने अपने लेखन में दोनों को जगह दी। 1947 के बाद का दौर ख़ुशी का दौर था। लेकिन 1964 के बाद मोहभंग का समय शुरू हुआ। कविता लेखन में जोश अधिक था, मगर गद्य में अधिक उत्सवधर्मिता नहीं दिखाई दी। आज का समय साहित्य के प्रतिष्ठापन का दौर है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि हमारे साहित्यकारों ने लोक साहित्य को नई विधाओं से जोड़ते हुए उसे एक साथ इतिहास और भविष्य की संभावनाओं के साथ प्रस्तुत किया। उन्होंने कन्नड लेखक शिवराम कारंत और भैरप्पा के साहित्य पर बोलते हुए उनमें दर्ज राष्ट्रीय भावनाओं का जिक्र किया। उन्होंने आगे कहा कि आज का समय उपभोक्तावादी एवं पूँजीवादी समय है। ऐसे समय में हमें भविष्य के लेखकों पर भरोसा करना होगा। इस सत्र का समाहार वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने दिया और स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने दिया। गोष्ठी के अगले सत्र 'दलित साहित्य : स्वाधीनता की पुनः प्राप्ति' और 'स्वाधीनता का सुदृढ़ीकरण : राष्ट्रीय एकता के उपकरण के रूप में साहित्य' विषय पर क्रमशः के. इनोक एवं रघुवीर चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए, जिनमें शरण कुमार लिम्बाले, श्योराज सिंह बेचैन, शाफ़े किदवई एवं मालन ने अपने विचार व्यक्त किए।

युवा साहिती : नई फसल कार्यक्रम में 27 युवा लेखकों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात विद्वान और आलोचक इंद्रनाथ चौधुरी ने दिया। स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी हमेशा से युवा रचनाकारों को आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय रही है। युवा पुरस्कार के अतिरिक्त नवोदय योजना के तहत भी युवाओं की प्रथम पुस्तक को प्रकाशित किया जाता है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में इंद्रनाथ चौधुरी ने कहा कि युवा एक धूप के समान होते हैं। जो कहीं भी फैल जाते है। उन्होंने

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

कई युवा लेखकों के उदाहरण देते हुए कहा कि छोटी या बड़ी उम्र विद्वता के लिए कोई मायने नहीं रखती है। आगे उन्होंने कहा कि सभी महत्त्वपूर्ण आंदोलन की सूत्रधार युवा पीढ़ी ही होती है और पॉपुलर लेखन और साहित्यिक लेखन के बीच तुलना करने की प्रथा पश्चिमी आधुनिकतावाद की देन है। इन दोनों के बीच अगर मुझे चुनना हो तो मैं उस लेखन को चुनूँगा, जो जिंदगी को सच्चाई से प्रस्तुत कर रहा है। इस सत्र में हिमालय जाना (बाङ्ला), रोशन बराल 'रोशन' (डोगरी), चंद्रेश मकवाना (गुजराती), प्रेम शंकर शुक्ल (हिंदी), लोन इम्तियाज़ (कश्मीरी), डी. अनिल कुमार (मलयाळम्), रवि कोरडे (मराठी), पाली ख़ादिम (पंजाबी), वासिफ़ यार (उर्दू) ने अपनी–अपनी भाषाओं में रचनाएँ प्रस्तुत कीं। 'लेखन : जुनून या व्यवसाय?' विषयक विचार सत्र की अध्यक्षता श्रीमती नमिता गोखले ने की। उन्होंने कहा कि आज कल साहित्य का पूरा परिदृश्य बदल गया है। नई पीढ़ी में प्रोफेशनल या पॉपुलर लेखन पर ज्यादा विचारा–विमर्श होता है। लेकिन नए माध्यमों के आने से युवा पीढ़ी में अपनी अभिव्यक्ति के प्रति सजगता बढ़ी है और वे जल्द से जल्द और ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचना चाहते हैं। इस सत्र में रत्नोत्तमा दास बिक्रम (असमिया), अच्युतानंद मिश्र (हिंदी), अनुश्री राठौड़ (राजस्थानी), वेमपल्ली गंगाधर (तेलुगु) भी अपने विचार व्यक्त किए। सभी का कहना था कि लेखक बनने के लिए जुनून की जरूरत होती है और उससे प्राप्त संतुष्टि को पैसे से नहीं खरीदा जा सकता। कहानी–पाठ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया लेखिका पारमिता सतपथी ने की। इस सत्र में उपासना (हिंदी), श्रीधर बनवासी जी.सी. (कन्नड), सुमिता प्रभु (कोंकणी) एवं देवप्रिया प्रियदर्शी चक्र (ओड़िया) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

अंतिम सत्र कविता पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता अष्टभुजा शुक्ल ने की तथा धीरज बसुमतारी (बोडो), के. राजा अंजना (अंग्रेजी), उमेश पासवान (मैथिली), करना बिराहा (नेपाली), गुलाब लढाणी (सिंधी), युवराज भट्टराई (संस्कृत), बिरसांत हांसदा (संताली) एवं जे. तमिऴ सेलवन (तमिऴ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कवि–सम्मलेन आज सायं 6.00 बजे कवि–सम्मेलन का भी आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू कवि शीन काफ़ निज़ाम ने की। इसमें हिंदी–उर्दू के लोकप्रिय कवियों– आलोक श्रीवास्तव, अशोक चक्रधर, बुद्धिनाथ मिश्र, चंद्रभान ख़याल, कुँवर बेचैन, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, मधु मोहिनी उपाध्याय, माहेश्वर तिवारी, मंसूर उस्मानी, मुमताज मुनव्वर एवं राजेश रेड्डी ने अपनी कविताएँ/ग़ज़लें और गीत सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

(के. श्रीनिवासराव)